B-III
L-39
MIH

जनजातीय विद्रोह

*महत्वपूर्ण

पूर्वी भारत	उत्तर पूर्व	दक्षिण भारत A.P
चुआर	अहोम	रम्पा विद्रोह
कोल	खासी	(1879-1884)
* संथाल	* नागा	और
* खोंड		*1922-24 के बीच
* सवार		
* मुंडा		
*ताना भगत		

पश्चिम भारत
⇓
महाराष्ट्र, गुजरात

भील
कोली
* रामोसी

कारण :-

- ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण जनजातीय समाज की पारम्परिक जीवन शैली का टूटना।
- भू-राजस्व बदोंबस्त को जनजातीय क्षेत्रों में भी लागू किया गया इससे सामूहिक स्वामित्व की अवधारणा कमजोर हुई।

Scanned by CamScanner

• प्रशासनिक मशीनरी के द्वारा उनके जीवन में हस्तक्षेप जैसे- पुलिस, न्यायपालिका इत्यादि।

• महाजनों, जमींदारों, ठेकेदारों इत्यादि के द्वारा उनके जीवन में हस्तक्षेप।

दिकू ⇒ बाहरी हस्तक्षेप
खुंटकुटी ⇒ सामूहिक स्वामित्व

• 19वीं सदी के उत्तरार्ध में कुछ अन्य कारणों ने भी जनजातीय समाज को विद्रोह के लिए उकसाया जैसे ⇒

(i) 1860 के दशक में झूम खेती को प्रतिबंधित किया गया।

(ii) ब्रिटिश सरकार ने न केवल वन क्षेत्रों पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों को लगाया बल्कि कुछ उत्पादों पर उत्पाद शुल्क भी आरोपित किया इससे भी उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई।

(iii) जनजातीय समाज से चमत्कारिक गुणों का दावा करने वाले नेताओं का उदय।

(iv) ईसाई मिशनरियों का उनके जीवन में हस्तक्षेप।

• 20वीं सदी के पूर्वार्ध में विशेषकर गांधीवादी चरण में गांधी जी की दिनचर्या, वेशभूषा, प्रकृति के साथ लगाव, रचनात्मक कार्य इत्यादि ने भी जनजातीय समाज को प्रभावित किया।

Scanned by CamScanner

विशेषताएँ :-

- जनजातीय विद्रोहों का लक्ष्य था शोषण से मुक्ति एवं पुरानी व्यवस्था की स्थापना।
- अधिकांशतः विद्रोह हिंसात्मक प्रकृति का था एक तरफ आदिम हथियारों से लैस जनजातीय समाज थी वहीं दूसरी तरफ ब्रिटिश सेना जिसके पास आधुनिक हथियार थे।
- विद्रोहों के दौरान सरकारी कार्यालयों को भी निशाना बनाया जाता था तथा उन बाहरी लोगों को भी जो अंग्रेजों का समर्थन करते थे।
- कुछ एक विद्रोहों में कानूनी मोर्चे पे भी लड़ाई लड़ी गई जैसे- मुंडा विद्रोह (सफलता नहीं मिली)
- गांधीवादी चरण में अखिल भारतीय आन्दोलन में जनजातीय समाज की भी भागीदारी दिखी और इन्होने अहिंसात्मक तरीके से संघर्ष किया।
- जनजातीय विद्रोह में जनजातीय विशेष की ही भागीदारी रही तथा नेतृत्व भी जनजातीय समाज से होता था। विद्रोह के दौरान उन बाहरी लोगों को निशाना नही बनाया गया जिनकी जीवन में सहयोगी भूमिका थी जैसे- बढ़ई, लुहार, आदि।
- विद्रोह का प्रसार स्थानीय स्तर तक रहा जिन क्षेत्रों मे विद्रोह करने वाली जनजातियों की

Scanned by CamScanner

आबादी रहती थी उन क्षेत्रों तक ही विद्रोह का प्रसार दिखा।

- विद्रोह के दौरान संगठित होने का प्रयास किया जाता था।
- गांधीवादी चरण को छोड़ दे तो इन पर राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव अपवाद स्वरूप ही दिखाई पड़ता है और न ही इन्हें उपनिवेशवाद की समझ थी।
- संसाधनों की कमी, हिंसक टकराव, सीमित प्रसार, सीमित जनाधार इत्यादि कारणों से अधिकांशत: विद्रोह असफल हुए। असफलता के बावजूद जनजातीय विद्रोहों ने सरकार के शोषणकारी चेहरे को उजागर किया तथा आने वाली पीढ़ी को विद्रोह के लिए प्रेरित किया। * हूल - (संथाल क्रान्ति)

* उल्गुलान – (महान विद्रोह)(मुंडा)

* मेरिया प्रथा - नरबलि प्रथा (खोंड)

* संथाल परगना - प्रशासनिक ईकाई

* 1908 - छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम

गैर ब्राह्मणवादी आन्दोलन / निम्न जातीय आन्दोलन

[क्या, क्यों, तथ्यात्मक, डॉ० अम्बेडकर]

क्या :-

19वीं सदी के उत्तरार्ध एवं 20वीं सदी के पूर्वार्ध में दलीत समाज के बीच से समाज सुधार के लिए जो पहल की गई उसे निम्न जातीय आन्दोलन या गैर ब्राह्मणवादी आन्दोलन के रूप में जाना जाता है। यह समाज सुधार आन्दोलन का ही एक भाग है।

क्यों :-

19वीं सदी में विभिन्न करणों से इसकी पृष्ठभूमि निर्मित हुई जैसे आधुनिक शिक्षा का प्रसार, सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन का प्रभाव एक नया राजनीतिक एवं आर्थिक परिवेश, आधुनिक परिवहन के साधन जैसे रेलवे इत्यादि।

तथ्यात्मक जानकारी :-

महाराष्ट्र → महात्मा ज्योतिबा फूले एवं सावित्री बाई फूले
- 1873 - सत्यशोधक समाज
- दीनबंधु - अखबार
- गुलामगिरी - उपन्यास

केरल - नरायण गुरू
- 1902 में SNDP योगम नामक संस्था की स्थापना

Scanned by CamScanner

मद्रास - 1915-16 न्यायदल / Justice party
संस्थापक - नायर, चेट्टी मुदलियार
1924-25 में आत्मसम्मान आन्दोलन
↳ रामास्वामी नायकर पेरियार

कोल्हापुर के साहू जी महाराज
↳ 1920-30 के दशक में दलितों के उत्थान के लिए कार्य किया।

मैसूर ⇒ प्रजामित्र मंडली, वोक्कालिंगा संघ } ⇒ दलित उत्थान से जुड़े हुए संस्था

सामान्य विशेषता :-

- जाति प्रथा की कठोर शब्दों में आलोचना।
- छुआछूत का विरोध।
- सामाजिक भेदभाव को बनाए रखने वाले सभी प्रतीकों का विरोध जैसे - तालाब, कुआँ, मंदिर सड़क, धर्मग्रन्थ इत्यादि।
- आधुनिक शिक्षा का समर्थन।
- पुरोहितवाद कर्मकांड, मूर्तिपूजा इत्यादि की कठोर

शब्दों में आलोचना।

- प्रशासनिक सेवा एवं विधान मण्डलों में दलितों की भागीदारी बढ़ाए जाने का समर्थन।

डॉ अम्बेडकर

सामाजिक क्षेत्र में →

- आत्मकथा - वेटिंग फार वीजा
- अन्य पुस्तक - जाति का विनाश, शूद्र कौन थे
- पत्रिका → बहिष्कृत भारत
  → मूकनायक
- संस्था - बहिष्कृत हितकारिणी सभा
- सत्याग्रह - महार सत्याग्रह 1927
  1930 - कलाराम मंदिर सत्याग्रह।

आर्थिक क्षेत्र में -

- ईस्ट इण्डिया कंपनी के वित्त एवं प्रशासन पर शोधपत्र
- हिल्टन यंग आयोग - भारतीय वित्त एवं अर्थव्यवस्था
  └ के समक्ष भारतीयों का पक्ष रखा
- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वायसराय परिषद के सदस्य। इस हैसियत से श्रमिकों के कार्य के घंटे को 12 से 8 कराने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

Scanned by CamScanner

राजनीतिक क्षेत्र :-

- तीनो गोलमेज सम्मेलन ।
- 1936 में स्वतंत्र लेबर पार्टी का गठन
- वायसराय परिषद के सदस्य।
- 1942 में एक अनुसूचित जाति संघ नामक पार्टी।
- संविधान सभा के सदस्य एवं मसौदा समिति (ड्राफ्ट समिति) के चेयरमैन
- कानून मंत्री

1939 - त्रिपुरी अधिवेशन,

द्वितीय विश्वयुद्ध एवं भारतीय राष्ट्रवाद

(1939 - 45)

- कांग्रेस का दृष्टिकोण
- मार्च 1940 — कांग्रेस / मुस्लिम लीग
- अगस्त 1940 - प्रस्ताव
- व्यक्तिगत सत्याग्रह
- क्रिप्स मिशन
- भारत छोड़ो आन्दोलन
- आजाद हिंद फौज

Scanned by CamScanner

कांग्रेस का दृष्टिकोण :-

- द्वितीय विश्वयुद्ध में सरकार को समर्थन दे या नही दे इसको लेकर कांग्रेस में अलग-अलग दृष्टिकोण दिखाई पड़ते है एक तरफ राजगोपालाचारी अंग्रेजों को बिना किसी शर्त के समर्थन देने के पक्ष में थे वही दूसरी तरफ सुभाषचन्द्र बोस एवं अन्य समाजवादी नेता किसी भी प्रकार के समर्थन का विरोध कर रहे थे और युद्ध को अवसर के रूप में देख रहे थे।

- तीसरी तरफ गांधी जी, नेहरू जी इत्यादि नेता थे जो अंग्रेजों के पक्ष को उचित मानते थे नेहरू जी का मत था कि जबतक ब्रिटिश सरकार भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन नहीं करती तबतक अंग्रेजों को समर्थन देने का कोई औचित्य नहीं है।

- कुछ शर्तों के साथ कांग्रेस ने सरकार को सहयोग देने की बात कही जैसे-युद्ध समाप्त होते ही भारत में संविधान सभा का गठन किया जाए एवं भारत में एक राष्ट्रीय सरकार का गठन किया जाए।

- मार्च 1940

  कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन - अध्यक्ष - मौलाना आजाद।

Scanned by CamScanner

इन्होने कार्यकर्ताओं को आन्दोलन के लिए तैयार रहने को कहा।

- मार्च 1940 में ही मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन एवं पाकिस्तान का प्रस्ताव पारित हुआ। जिन्ना ने धर्म के आधार पर दो राष्ट्र का विचार रखा।

<u>नोट</u>:- 1940 में ब्रिटेन में राष्ट्रीय सरकार का प्रधानमंत्री चर्चिल को बनाया गया।

<u>1940 अगस्त प्रस्ताव / लिनलिथगो प्रस्ताव</u>

- भविष्य में भारत को डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिया जाएगा।
- वायसराय परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ायी जायेगी।
- युद्ध सलाहकारी परिषद का गठन किया जाएगा इसमें भारतीय भी शामिल होंगे।
- युद्ध समाप्त होते ही भारत में संविधान सभा का गठन किया जाएगा।
- अल्पसंख्यको की सहमति के बिना राजनीतिक सुधारों को लागू नहीं किया जाएगा।

Scanned by CamScanner